शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद का कथा संसार

डॉ. सरिता स्वामी
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आदिकाल से मानव अपनी भावनाओं को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता आ रहा है। भाषा ही वह साधन है जो एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को संस्कार और परंपराएँ प्रदान करती है। इसका सशक्त माध्यम साहित्य ही है। साहित्य समाज की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियों का ज्ञान देता है। किसी भी समाज का अध्ययन हम साहित्य के माध्यम से कर सकते हैं। प्रत्येक देश अथवा काल का साहित्य जनता की चित्तवृत्ति और भाषा का प्रमाणित दस्तावेज होता है। जिसका स्वरूप सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ परिवर्तित और विकसित होता जाता है। हिंदी साहित्य में कथा सम्राट के नाम से विख्यात मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवन में नाना विषयों पर सैंकड़ों कहानियां लिखीं। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

भारत की सभी भाषाओं में हिन्दी भाषा का साहित्य संपन्न और विशालता लिए हुए है। हिन्दी साहित्य के विशालतम स्वरूप को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में विभाजित करने का अनुपम कार्य आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है। जिससे यह ज्ञात होता है कि हमारा हिन्दी साहित्य विश्व साहित्य में सर्वश्रेष्ठ एवं व्यापक है। इस हिन्दी साहित्य की रचना प्राचीन काल से ही काव्य एवं गद्य के रूपों में हो रही है। "गद्य साहित्य का प्रारंभ संवत 1900 से माना जाता है।" परन्तु गद्य में हिन्दी भाषा का प्रवर्तन संवत् 1925 से माना गया है। गद्य साहित्य की भाषा को हिन्दी रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने दिया। उनका प्रभाव भाषा और साहित्य पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने प्रारंभिक गद्य भाषा को परिमार्जित कर एक नया रूप दिया और हिन्दी साहित्य का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी भाषा संस्कार की महत्ता ने ही उन्हें हिन्दी गद्य साहित्य का प्रवर्तक बनाया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी साहित्य को नवीन विषयों की ओर प्रवृत्त किया। इस प्रयास के फलस्वरूप गद्य के नए स्वरूप का जन्म हुआ।

आधुनिक गद्य साहित्य का निर्माण विभिन्न विधाओं में होने लगा। जो निबंध, कहानी, एकांकी, उपन्यास, रिपोर्ताज, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, एवं आलोचना के रूप में समाहित है। अनेक महान गद्यककारों ने विभिन्न विधाओं में गद्य को विकसित किया। गद्य की विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कहानी है।

कहानी का शाब्दिक अर्थ है - कहना। मनुष्य प्रवृत्तियों के अंतर्गत कथा कहानियों को कहना और सुनना आता है। कहानियों का युग आदिकाल से ही चला आ रहा है। इस कथा साहित्य का क्षेत्र समग्र साहित्य में व्यापक और सर्वश्रेष्ठ है।

भारतीय कथा साहित्य का व्यापक विकास 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका मे छपी किशोरीलाल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गोस्वामी द्वारा रचित कहानी 'इंदुमती' से माना है। इसके बाद कहानियों के प्रति पाठकों की जिज्ञासा और अधिक बढ़ी और कथा साहित्य सबसे अधिक समृद्ध हुआ है। भारतीय कथा साहित्य की आकाश गंगा को शोभित करने वाले कथाकारों में प्रमुख - जयशानाकर प्रसाद, प्रेमचंद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', विशम्भरनाथ शर्मा, बद्रीनारायण भट्ट, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, जैनेन्द्र कुमार, वृन्दावनलाल वर्मा, सियारामशरण गुप्त, हृद्येश, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा, इलाचंद्र जोशी, उपेन्द्र नाथ अश्क, यशपाल, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, अमरकान्त, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, ज्ञानरंजन, भीष्म साहनी, शैलेश मटियानी, फणीश्वरनाथ रेणु आदि हैं।

हास्य कहानीकार - जी.पी. श्रीवास्तव. कृष्णदेव प्रसाद गौढ़, (बेढब बनारसी) अन्नपूर्णानन्द, जयनाथ नलिन, हरिशंकर परसाई आदि हैं। महिला कथाकारों का भी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है, जिनमें सुभद्रा कुमारी चैहान, शिवरानी देवी, उषा देवी मित्रा, सत्यवती मलिक, चन्द्र किरण सौनरिक्सा, मन्नू भंडारी, रजनी पणिक्कर, उषा प्रियम्बदा, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डे, मंजुला भगत, मालती जोशी, शिवानी, ममता कालिया, सूर्यबाला, कुसुम अंसल और अमृता प्रीतम आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचंद का कथा संसार

हिन्दी के कथा साहित्य के आकाश में प्रेमचंद एक दीप्तमान नक्षत्र थे, जिन्होंने भारतीय कथा साहित्य को अपनी आभा से चमकृत किया है तथा उसे नूतन दिशा प्रदान की। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में उपन्यास सम्राट के नाम से विख्यात है परन्तु हिन्दी साहित्य के कथा साहित्य पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट है कि प्रेमचन्द आधुनिक कथा साहित्य के जन्मदाता है। उन्होंने कथा को तिलिस्मी स्वरूप से निकाल कर सामाजिकता प्रदान की। उनकी कथाओं को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे कथा का घटनाक्रम हमारे आसपास ही घटित हो रहा है। पाठक उसे अपने अनुभवों से जोड़ने लगता है। प्रेमचंद ने कथा साहित्य को विशाल और व्यापक क्षेत्र प्रदान किया है। जिसमें ऐसे तत्व अंकुरित और विकसित हुए कि उसमें भारतीय समाज की परम्पराओं और रीति रिवाजों की सुगंध आने लगी।

प्रेमचंद ने साहित्य रचना का प्रारंभ उर्दू से किया। जिन्हें वे नवाबराय के नाम से लिखते थे। शीघ्र ही उन्होंने हिन्दी को अपनी रचना भाषा बना लिया। इससे उनके रचना संसार को व्यापकता मिली। प्रेमचंद की कहानियों को देखने पर हमें ज्ञात होता है कि "1915 में प्रेमचंद की पहली हिन्दी मौलिक कहानी 'पंच परमेश्वर' प्रकाशित हुई।" उनकी पहली कहानी के सम्बन्ध में विद्वानों ने निम्नांकित कथन कहे हैं :

"पंच परमेश्वर (सरस्वती 1916) उनकी पहली कहानी है जो हिन्दी में प्रकाशित हुई।"

"उनकी पहली रचना पंच परमेश्वर ही नये युग की सूचना देने में समर्थ हुई।"

"हिन्दी में उनकी कहानी 'सौत' (पहली कहानी) मानी जाती है।"

"प्रेमचंद की पहली हिन्दी कहानी रचना 'ममता' ही है।"

"प्रेमचंद का प्रथम हिन्दी कहानी संग्रह 'सप्त सरोज' 1917 में प्रकाशित हुआ।"

प्रेमचंद की कहानियों पर हिंदी में अनेक शोध किये जा चुके हैं, परन्तु उनकी कहानियों की संख्या निरण में परस्पर विरोधी सूचनाएँ भी उपलब्ध हैं। प्रेमचंद के अपने विचारों के अनुसार,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"मेरी कहानियों की कुल संख्या लगभग ढाई सौ है।"

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार, "प्रेमचंदजी की कहानियों की संख्या 300 के लगभग है।"

प्रारंभिक काल में उनकी रचनाएं माधुरी, चाँद, सरस्वती, जागरण, हंस, विशाल भारत, वीणा, उषा, मतवाला, आदि में प्रकाशित होती रही हैं। प्रेमचंद की कहानी संकलनों की सारी कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों तथा 'कफन' में प्रकाशित हुई हैं, जिनकी कुल संख्या दो सौ सत्रह (217) है। इनके अतिरिक्त "अमृतराय की खोजी हुई छप्पन (56) कहानियाँ हैं, जो गुप्तधन के दो खण्डों में प्रकाशित हुई हैं। इस प्रकार प्रेमचंद की कहानियों की कुल संख्या दो सौ तिहत्तर निश्चित होती है।"

जाफर रज़ा द्वारा रचित 'प्रेमचंद : उर्दू-हिन्दी कथाकार' में विभाजित रचनाकाल के अनुसार प्रेमचंद की रचना का प्रथम काल 1900 से 1915 तक माना है। जिसकी संख्या 22 है, जो उनके जीवन काल में ही आ गई थी। जिनके नाम है-1. यही मेरा वतन है, 2. पाप का अग्निकुंड, 3. शाप, 4. शिकार, 5. रानी सारंधा, 6. बड़े घर की बेटी, 7. राजा हरदौल, 8. गरीब की आह, 9. ममता, 10. अमावस की रात, 11. धर्म संकट, 12. शिकारी राजकुमार, 13. सफेद खून, 14. पछतावा, 15. परीक्षा, 16. नमक का दरोगा, 17. विस्मृति, 18. बेटी का धन, 19. कप्तान साहब, 20. सौत, 21. ईमान का फैसला, 22. कर्मो का फल।

द्वितीय रचना काल 1916 से 1930 तक माना गया है जिसमें 103 कहानियाँ हैं, जो उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो गई थी। इनके नाम हैं - 1. दो भाई, 2. सज्जनता का दंड़, 3. पंच परमेश्वर, 4. घमंड का पुतला, 5. जुगनू की चमक, 6. धोखा, 7. मर्यादा की बेदी, 8. ज्वालामुखी, 9. उपदेश, 10. स्वत्व रक्षा, 11. महातीर्थ, 12. दुर्गा का मंदिर, 13. बलिदान, 14. सेवामार्ग, 15. बैंक का दीवाला, 16. विमाता, 17. अनिष्ट शंका, 18. इज्जत का खून, 19. दफ्तरी, 20. बोध, 21. शंखनाद, 22. आत्माराम, 23. मनुष्य का परमधर्म, 24. पशु से मनुष्य, 25. बूढ़ी काकी, 26. शान्ति, 27. मृत्यु के पीछे, 28. ब्रह्म का स्वांग, 29. विषम समस्या, 30. विचित्र होली, 31. प्रारब्ध, 32. लाल फीता, 33.त्यागी का प्रेम, 34. मूठ, 35. हार की जीत, 36. अधिकार चिंता, 37.नैराश्य-लीला, 38. कौशल, 39. सत्याग्रह, 40. वज्रपात, 41. मुक्ति मार्ग, 42. क्षमा, 43. निर्वासन, 44. भूत, 45. दीक्षा, 46. शतरंज की बाजी, 47. विनोद, 48. सवा सेर गेंहू, 49. डिग्री के रूपये, 50. सभ्यता का रहस्य, 51. नरक का मार्ग, 52. स्त्री और पुरुष, 53. भाड़े का टट्टू , 54. चोरी, 55. स्वर्ग की देवी, 56. लाटरी, 57. दण्ड, 58. शुद्रा, 59. परीक्षा, 60. लैला, 61. मंत्र 1, 62. मंत्र 2, 63. लांछन, 64. रामलीला, 65. निमंत्रण, 66. हिंसा परमोधर्म, 67. पुत्र प्रेम, 68. सती, 69. आत्म संगीत, 70. कामना तरु, 71. मंदिर, 72. मांगे की घड़ी, 73. दुराशा, 74. अग्नि समाधि, 75. कजाकी, 76. प्रेरणा, 77. दो सखियाँ, 78. सुहाग का शव, 79. दरोगा जी, 80. विद्रोही, 81. इस्तीफा, 82. सौभाग्य के कोडे, 83. गुरु मंत्र, 84. जिहाद, 85. आँसुओ की होली, 86. प्रायश्चित्त, 87. गुल्ली डंडा 88. आगा पीछा, 89. माँ, 90. अलग्योझा, 91. घर जमाई, 92. घास वाली, 93. दो कब्रें, 94. जुलूस, 95. पति से पत्नी, 96. पूस की रात, 97. शराब की दुकान, 98. आहुति, 99. नाग पूजा, 100. आदर्श विरोध, 101. विध्वंस, 102. माता का हृदय, 103. खुचड़।

सन् 1931 और 1936 के पूर्व ही प्रेमचंद चरमख्याति प्राप्त कर चुके थे, परन्तु उनकी आर्थिक समस्याएँ उनके सामने ज्यों की त्यों

खड़ी थीं। "इसी कालखंड में भारत में एक साहित्यिक आंदोलन हुआ जिसने भारतीय साहित्यिक इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। जिसे प्रेमचंद ने अपना नेतृत्व प्रदान किया। साहित्यिक जगत में 'प्रगतिशील लेखक आंदोलन' की संज्ञा प्रदान की गई। इस काल में प्रेमचंद की 37 कहानियाँ ऐसी हैं, जो उनके जीवन काल में प्रकाशित हुईं। हो सकता है कि इनके अतिरिक्त कुछ कहानियाँ और भी मिल जाएँ, जो कहानी ज्ञात हैं उनके नाम हैं- 1.लांछन, 2. जेल, 3. डिमांस्ट्रेशन, 4. आख़री हीला, 5. प्रेम का उदय, 6. स्वामिनी, 7. दो बैलों की कथा, 8. सद्गति, 9. लेखक, 10. मृतक भोज, 11. स्मृति का पुजारी, 12. कुसुम, 13. चमत्कार, 14. गिला, 15. नया विवाह, 16. डामुल का कैदी, 17. बेटों वाली विधवा, 18. ईदगाह, 19. ज्योति, 20. नेउर, 21. बालक, 22. सती, 23. शान्ति, 24. रियासत का दीवान, 25. दूध का दाम, 26. मुफ्त का यश, 27. बासी भात में खुदा का साझा, 28. बडे भाई साहब, 29. खुदाई फौजदार, 30. जीवन का शाप, 31. गृहनीति, 32. कफन, 33. मिस पद्मा, 34. तथ्य, 35. दो बहनें, 36. गुप्त धन, 37. नशा।

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं का उद्देश्य मात्र उनकी आर्थिक परिस्थितियाँ अथवा अपनी रचनाओं के लिए पाठकों का व्यापक क्षेत्र उपलब्ध कराना ही नहीं था, वरन् प्रेमचंद समसामयिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के दबाव में आर्य समाज की ओर न केवल मुड़ गये वरन् उसकी गतिविधियों में अपना सक्रिय योगदान भी देना चाहते थे।

प्रेमचंद ने असहयोग आंदोलन में अपनी सक्रिय भागीदारी प्रदर्शित करते हुए सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। वे देश प्रेम को प्रारम्भ से ही सर्वोच्च स्थान देते रहे हैं। उनकी कहानी 'सोजेवतन' में वे लिखते हैं कि "खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे वह दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।" स्वत्व रक्षा, घर की जीत, विषम समस्या, विचित्र होली, अधिकार चिन्ता, आदर्श विरोध, त्यागी का प्रेम, भाड़े का टट्टू आदि कहानियाँ उन्होंने देश प्रेम से ओत-प्रोत लिखी। उन्होंने अपने साहित्य को प्रारंभ से अंत तक देश भक्ति की भावना से जोड़े रखा है। वह हिन्दी के पहले लेखक हैं, जिनके लिए स्वाधीनता का अर्थ कभी भी विदेशी शासकों से कुछ राजनीतिक सुविधाएँ पा लेना या जनता या देश की राजनीतिक स्तर पर मुक्ति नही रहा है। स्वाधीनता उनके लिए सदैव किसी देश या जाति की पूर्ण अस्मिता का पर्याय रही है और उनकी सारी लड़ाई भारतीय जनता की पूर्ण स्वतंत्रता की लड़ाई थी। उनकी राष्ट्रीय चेतना उनके समूचे लेखन में विद्यमान है। गांधीवादी सिद्धांत में प्रेमचंद की दृढ़ आस्था थी और इस आस्था का प्रभाव उनकी कुछ कहानियों में भी दृष्टिगोचर होता है उनके नाम है- आदर्श विरोध, दुस्साहस, जेल, पत्नी से पति, विश्वास, शराब की दुकान, जुलूस, मैकू, सुहाग की साड़ी, तावान, सत्याग्रह आदि हैं। प्रेमचंद की कहानियों में गांधीवादी विचारधारा के साथ साम्यवादी विचारधारा भी कुछ कहानियों में प्रदर्शित होती है। वे वर्ग भेद को मिटाकर आर्थिक एवं सामाजिक समानता की स्थापना तो करना चाहते हैं, किन्तु इसके लिए वे वर्ग संघर्ष का रास्ता न अपनाकर सहयोग का रास्ता अपनाने की बात करते हैं। डॉ. राजेश्वर गुरु के शब्दों में "वे वर्गो का अस्तित्व तो स्वीकार करते हैं, लेकिन नए समाज के निर्माण में वर्ग संघर्ष की जरुरत नही मानते हैं।" अपने साम्यवादी विचार उन्होने कुछ कहानियों जैसे-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डामुल का कैदी, गुल्ली डंड़ा, नशा, पशु से मनुष्य, मोटर के छीटें, आदि में प्रस्तुत किए है।

प्रेमचंद जनता को कला की जननी मानते थे। अतः उनकी कहानियों का विषय जनता का जीवन होता था। उन्होंने समाज के साथ रहकर महान साहित्य रचा। चूंकि प्रेमचंद का जीवन ग्रामीण परिवेश में बीता अतः उसके मन में संघर्षरत किसान अथवा मजदूर सदैव विद्यमान रहा। उनकी रचनाओं में भारतीय कृषक एवं मजदूर वर्ग की अवस्था के अनेक मार्मिक चित्र मिलते हैं। उन्होंने किसानों के बीच चलने वाले तरह-तरह के भाव उनके राग द्वेष, दुख और संघर्ष के प्रत्येक दृश्य अपनी रचनाओं में लाने की चेष्टा की। कृषक जीवन का संभवतः ही कोई पक्ष उनसे अछूता रहा हो। समाज के सभी वर्गो की अपेक्षा किसानों के चित्रण में सर्वाधिक सफलता प्राप्त की है। किसानों का इतना बड़ा हिन्दी साहित्य में दूसरा कोई हितैषी नही होगा। प्रेमचंद ने कृषकों, खेत मजदूरों को अपनी कलम से उनकी बुनियाद तक जाकर उभारा है। उन्होंने मंदिरों-मठों में ईश्वर के नाम से होने वाले अत्याचार, महाजन और जमींदारों से आहत किसान का अपनी जमीन,घर,खलिहान और मर्यादा के लिए संघर्ष का जीता जागता प्रभावशाली चित्र अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनकी कुछ कहानियाँ- सवा सेर गेहूं, गरीब की हाय, बेटी का धन, बलिदान, विध्वंस, पूस की रात, घास वाली, मुक्ति मार्ग आदि में यह संघर्ष दृष्टिगोचर होता है।

प्रेमचंद के साहित्य में जिस युग का वर्णन है उस युग में बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह, स्त्री स्वतंत्रता, बहु विवाह, अनमेल विवाह जैसी कुरीतियाँ व्याप्त थीं। उन्होंने नारी पीड़ा को अपनी लेखनी से बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। वैश्या समस्या को उन्होंने उपन्यास में भी जगह दी। प्रेमचंद ने अपने जीवन के माध्यम से उदाहरण देते हुए विधवा विवाह का समर्थन किया। प्रेमचंद के विचारों में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। नारी समस्या को प्रस्तुत करती हुई उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी हैं इनमें- नागपूजा, धिक्कार, स्वामिनी, नया विवाह, जादू, बालक, उन्माद, विद्रोही, मिस पद्मा, वैश्या, कुसुम, लैला, तेंतर, आधार, एक आंच की कसर, स्वर्ग की देवी, नैराश्य लीला, निर्वासन, स्त्री-पुरुष, नरक का मार्ग, लांछन, सुभागी, कायर, ज्योति, दिल की रानी, शान्ति, बेटों वाली विधवा, सौत, ब्रह्म का स्वांग, दो सखियाँ, सती, भूत, आगा पीछा, दो कब्रें, आभूषण, त्यागी का प्रेम, विस्मृति, बड़े घर की बेटी, एक्ट्रेस, अग्नि-समाधि, सुहाग का शव, बहिष्कार, सती आदि है।

प्रेमचंद ने हिन्दू समाज की विसंगतियों का अनुभव साक्षात किया। वे जिस समाज में जीवन यापन कर रहे थे उस समाज में अस्पृश्यता समस्या मुख्य रूप से खान-पान, शादी-विवाह तथा मंदिर प्रवेश अथवा धार्मिक उत्सवों जैसी रुढ़ सामाजिक मान्यताओं को समर्थन प्राप्त था। प्रेमचंद ने अपनी कुछ कहानियों जैसे- सौभग्य के कोडे, ठाकुर का कुआँ, मंदिर, शूद्रा, दूध का दाम, सद्गति आदि में अछूतो की समस्या को उठाया है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से पाठकों के हृदय में समाज सुधार का जो बीज रोपित किया वह उनकी जागरूक समाजवादी विचारधारा को दर्शाता है। उनका कथा साहित्य अपने युग के समाज का ऐसा दर्पण है जिसमें उन सभी समस्याओं का चित्रण हुआ है, जिन्हें तत्कालीन जन मानस झेल रहा था।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में मानसिक परिस्थितियों के साथ आध्यात्मिकता का प्रदर्शन भी किया है। पूर्व जन्म और भावी जन्म के कल्पनात्मक चित्र ईश्वर में आस्था को प्रदर्शित करते कर्म और संस्कार को जीवंत करते पात्रों निर्माण किया है। उनकी कुछ कहानियाँ जैसे- चमत्कार, माता का हृदय, उपदेश, पूर्व संस्कार, ज्वालामुखी, सेवा मार्ग, प्रेरणा, जुगनू की चमक, शाप, दुर्गा का मंदिर, पिसनहारी का कुआँ, सुजान भगत, आत्म संगीत, कामना तरु रामलीला आदि है।

प्रेमचंद ने लगभग सभी सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालने के साथ-साथ तात्कालिक समाज में जी रहे पात्रों के मानवीय मूल्यों, दाम्पत्य प्रेम, को प्रदर्शित किया है। उनकी कहानी चोरी, कजाकी,महातीर्थ, सच्चाई का उपहार, विमाता, बूढ़ी काकी, ईदगाह आदि में प्रेम की पवित्रता, बालमन की निस्वार्थ आस्था का परिचय दिया है। उन्होंने बालवृंद के कोमल जीवन को भी अपनी कहानियों में स्थान दिया है। उनकी कहानियाँ आँसुओ की होली, बहिष्कार, कौशल, शान्ति, शंखनाद, मृत्यु के पीछे, खुचड़, प्रेम का उदय, घर जमाई, आखिरी हीला, गिला, स्मृति का पुजारी आदि में प्रेमचंद ने दाम्पत्य जीवन की समस्याओं और उसके विशुद्ध प्रेम का परिचय दिया है। उन्होंने अंधविश्वास से बंधी हुई जनता और सामाजिक पांडित्य, समाज सुधार, नयी सभ्यता का पाखण्ड करने वाले वर्ग को अपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया है। मंत्र, निमंत्रण, बौड़म, सज्जनता का दंड़, ढपोरशंख, मूठ, कानूनी कुमार, नेउर, दीक्षा, बासी भात में खुदा का साझा, बाबाजी का भोग, गुरुमंत्र, मनुष्य का परम धर्म, धिक्कार, रसिक सम्पादक, उपदेश, धर्म संकट, खून सफेद, मृतक भोज, दरोगाजी, आदि कहानियाँ समाज के उस रूप को प्रकट करती है। समाज का निर्माण जन मानस करता है, उस जनमानस की सोच समाज पर प्रभाव डालती है। धर्म के प्रति भीरुता प्रगतिशीलता की राह में अग्रसर होने से रोकती है। तत्कालीन समाज अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत था परन्तु अंग्रेजो की फूट डालो शासन करो की नीति ने हिन्दू और मुस्लिम के बीच गहरी खाई बनाना शुरू कर दी थी। जिससे भारत में एक और समस्या सांप्रदायिकता उठ खड़ी हुई। प्रेमचंद ने हिंसा परमोधर्म, मंत्र, जिहाद, क्षमा, आदि कहानियों में सांप्रदायिकता की समस्या को उठाया है और हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य के निर्मूलन की कोशिश भी की है। वर्तमान समय की भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी जैसी समस्या तत्कालीन समाज में भी व्याप्त थी। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों ईश्वरीय न्याय, कप्तान साहब, बैंक का दिवाला, चकमा, पछतावा, समस्या, सभ्यता का रहस्य, सत्याग्रह, डिग्री के रुपये, भाड़े का टट्टू, रियासत का दीवान, आदि के माध्यम से भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, जैसी समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है। प्रेमचंद ने लगभग सभी सामाजिक पहलुओं को अपनी कहानियों में स्थान दिया। प्रेमचंद ने जन साधारण और उनके जीवन को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। उनकी कहानियों का कथावस्तु, भाषा शैली, कला, सभी कुछ जन साधारण के लिए सहज और बोधगम्य है। उनके सर्वाधिक लोकप्रिय होने का रहस्य भी यही है कि उनकी कला का स्रोत लोक जीवन और उनका संसार है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद ने हिन्दी-साहित्य को गौरवान्वित किया और भारतीय साहित्य का विश्व साहित्य में स्थान बनाया। वे आधुनिक भारत के प्रतिनिधि

लेखक थे। उनकी रचनाओं में जहाँ प्राचीन और मध्यकालीन भारत का समन्वय मिलता है वहाँ आधुनिक भारत की धड़कनें भी सुनने को मिलती है प्रथम महायुद्ध, रुसी क्रांति, एवं पूंजीवाद के विकास ने भारतीय जनता की चेतना में असाधारण परिवर्तन ला दिया था, वह प्रेमचंद की रचनाओं में लिपिबद्ध है। साथ ही उन्होंने जिस शोषित, उत्पीड़ित भारतीय समाज का चित्रण किया है वह आज भी भारतीय समाज का दर्पण है। भारतीय जनता की सहृदयता, सहनशीलता, और वीरता उनकी रचनाओं से व्यक्त होती है। उनकी रचनाओं का अध्ययन करके हमें देश और जनता की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त होता है। वास्तव में उन्होंने जिन विशेषताओं को अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत किया, वे हमारी जनता और समाज की जातीय विशेषताएं हैं और विश्व को इनके माध्यम से भारतीय समाज का अध्ययन करने में सहायता मिली। उनका साहित्य ही उन्हें विश्व के साहित्यकारों में प्रतिष्ठित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 81

2 हिन्दी कहानी उद्भव और विकास, सुरेश सिन्हा, पृष्ठ 327

3 कलाकार प्रेमचंद, रामरतन भटनागर, पृष्ठ 31

4 कथाकार प्रेमचंद, जितेन्द्र नाथ पाठक, पृष्ठ 36

5 प्रेमचंद और उनका साहित्य, शीला गुप्त, पृष्ठ 349

6 प्रेमचंद: एक अध्ययन, राजेश्वर गुरू, पृष्ठ203

7 प्रेमचंद: उर्दू हिन्दी कथाकार, ज़ाफर रज़ा, पृष्ठ88

8 प्रेमचंद की बातें, भाग-2, दयानारायण निगम, पृष्ठ 236

9 प्रेमचंद साहित्यिक विवेचन, नन्द दुलारे वाजपेयी, पृष्ठ155

10 प्रेमचंद : कलम का सिपाही, अमृत राय, पृष्ठ665

11 प्रेमचंद: उर्दू हिन्दी कथाकार, ज़ाफर रज़ा, पृष्ठ238

12 प्रेमचंद और चेखव, भक्त राम शर्मा, पृष्ठ82

13 प्रेमचंद: एक अध्ययन, राजेश्वर गुरू, पृष्ठ240